शिक्षा, सीखना, मनुष्य और आचार : पावलो फ्रेयरे के विचार

❑ ललित किशोर

शिक्षा तटस्थ नहीं हो सकती या तो वह अनुकूलित करती है या फिर मुक्त। मुक्त करने वाली शिक्षा के पक्षधर पावलो फ्रेयरे ने दुनियां को एक बिल्कुल नया शिक्षाशास्त्र प्रदान किया है । जैसा कि स्वयं फ्रेयरे मानते थे, दुनियां की मुकम्मिल समझ और उसमें व्यक्ति की हैसियत को जाने वगैर सीखने की प्रक्रिया संभव नहीं है, इसलिए उनके शिक्षादर्शन का विशद् परिप्रेक्ष्य है और उसमें कोई शैक्षिक उपक्रम बाकी संसार से निरपेक्ष और विलग नहीं है । फ्रेयरे की दर्जनभर किताबों से उनके शिक्षा दर्शन का सार-संक्षेप सरल तरीके से प्रस्तुत कर पाना एक कठिन काम है । यहां ऐसा करने की कोशिश की गई है ।

पावलोफ्रेयरे (1921-1997) ब्राजील के प्रमुख शिक्षा शास्त्री रहे हैं । उनके शैक्षिक चिंतन तथा दर्शन ने लैटिन अमेरिका के जन-आंदोलनों को काफी प्रभावित किया है । उन्होंने ब्राजील में एक अनूठे ढंग का साक्षरता अभियान चलाया जो एक नई सामाजिक जागृति का माध्यम बना । उन्होंने समाज में उत्पीड़न के विभिन्न रूपों को निकटता तथा गहराई से देखा, परखा और जांचा। उन्होंने यह पाया कि वर्तमान शिक्षा राजनीति से भिन्न नहीं है, यह भी राजनीति की तरह एक वर्गीय स्वरुप लिए हुए है । इस स्थिति को परिवर्तित करने की महती आवश्यकता है । फ्रेयरे का शिक्षा-दर्शन सकारात्मक है । वे शिक्षा को लोगों की मुक्ति के साधन के रूप में देखते हैं और उनका शिक्षा दर्शन लोगों को उनकी अपनी मुक्ति की प्रक्रिया में स्वयं की भागीदारी के लिए सक्षम बनाने की सामर्थ्य रखता है ।

पिछले दो वर्षों में कुछ शैक्षिक गोष्ठियों में भाग लेने का अवसर मिला जिसमें पावलो फ्रेयरे का साहित्य चर्चा का विषय रहा है । इन गोष्ठियों में पावलो फ्रेयरे के शिक्षा दर्शन के बारे में सुनने व पढ़ने को जो मिला उसको सार रूप में नीचे प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शिक्षा के बारे में विचार

पावलो फ्रेयरे के अनुसार शिक्षा का स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि मनुष्यों का विकास हम किस दिशा में करना चाहते हैं, शिक्षा के क्या उद्देश्य तय करते हैं ? क्या हम शिक्षा द्वारा मुक्ति के द्वार खोलना चाहते हैं या मनुष्यों को सक्षम पालतू पशु बनाना चाहते हैं ? वे शिक्षा के यांत्रिक व्यक्तिवादी तथा प्रतिस्पर्धात्मक स्वरुप को बदलने की जरुरत पर बल देते हैं । उनके शिक्षा के बारे में मुख्य विचार कुछ इस प्रकार हैं:

- शिक्षा अपने आप में मुक्ति के लिए कार्यवाही की एक प्रक्रिया है ।

- सच्ची शिक्षा विवेक को अनुप्राणित कर चेतना के उच्च स्तरों को उद्घाटित करती है ।

- गुणात्मक शिक्षा की प्रक्रिया से आरंभ से ही छात्रों की सक्रिय रचनात्मक भागीदारी सुनिश्चित हो सकती है ।

- शिक्षा तटस्थ नहीं हो सकती या तो वह अनुकूलित करती है या फिर मुक्त । मुक्त करने वाली शिक्षा खामोशी तथा अलगाव की संस्कृति को तोड़ती है ।

- शिक्षा का अतिप्रबंधित, अति-उपभोक्तावादी तथा स्पर्धात्मक स्वरूप शोषण करने वाला होता है ।

सीखने की प्रक्रिया पर विचार

फ्रेयरे सीखने की प्रक्रिया को चिंतनशीलता तथा कर्मशीलता को विकसित करने का साधन मानते हैं । सीखने की प्रक्रिया में पाठ तो मात्र भाषिक संदर्भ है । सीखने के लिए संदर्भों के साथ गतिशील क्रिया करनी होती है । संसार के बोध में अपने विचारों की अभिव्यक्ति ही सीखने को सार्थक करती है ।

सीखने की प्रक्रिया के विषय में फ्रेयरे के निम्नलिखित विचार महत्वपूर्ण हैं।

- सीखने की प्रक्रिया रटने का पर्याय नहीं है, जिसमें ज्ञान को खोजा या सृजित नहीं किया जाता बल्कि अन्यों द्वारा दिये गये शब्दों, पदों या वाक्यों को मात्र दोहराया जाता है ।

- सीखने की प्रक्रिया में पढ़ने-लिखने पर विश्लेषणात्मक तथा समालोचनात्मक दृष्टि से सोचा जाता है ।

- सीखना आलोचनात्मक विश्लेषण तथा मूल्यों एवं विकल्पों की खोज की प्रक्रिया है ।

- सीखना मूर्त अनुभव से शुरू हो । फिर चिन्तन, मनन, विश्लेषण के द्वारा ज्ञान-सृजन की अमूर्तन प्रक्रिया से गुजरे और अंतत: प्रक्रिया तथा उत्पाद की भी समीक्षा हो ।

फ्रेयरे सीखने को एक कर्म के रूप में देखते हैं । उनके अनुसार मनुष्य का सचेत रूप से क्रियाशील होकर अपनी क्रिया द्वारा संसार तथा स्वयं को बदलना ही कर्म है ।

मनुष्य के बारे में मान्यताएं

फ्रेयरे मनुष्य की चेतना को खाली पात्र या कोरा कागज नहीं मानते जिसे तथाकथित पाठों के शब्द अपनी चेतना में भरने या उस पर अंकित करने होते हैं । उनके अनुसार महज शब्दों के उपहार से जीवन की समझ या मनुष्य की क्षमताओं का विकास नहीं हो सकता । मनुष्य के बारे में फ्रेयरे की मान्यताएं कुछ इस प्रकार हैं :

- मनुष्य किसी प्रदत्त समय या स्थान पर जो है, उससे ज्यादा योग्य है।

- जो मनुष्य अभी है, उससे ऊपर उठने की क्षमता को बार-बार प्रदर्शित करना ही मनुष्य होने की पहचान है । मनुष्य में उच्छेदन क्षमता है ।

- 'बोध के बोध' की कुंजी भी मनुष्य के पास है जो उसे अन्य प्राणियों से अलग करती है । वह अपने कार्य तथा व्यवहार पर विचार करने की क्षमता रखती है । मनुष्य अपने को अधिक समर्थ मानव बनाने के लिए सक्षम है ।

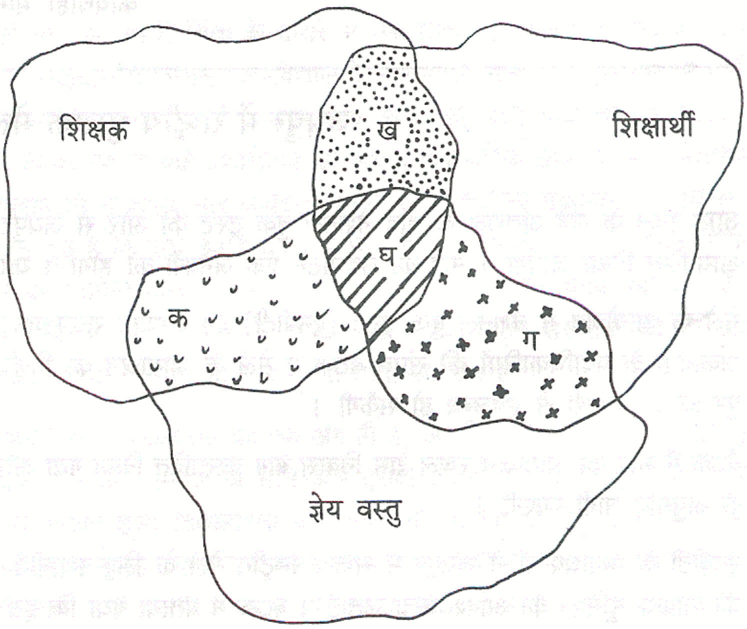
- हर तरह के सामाजिक तथा वैचारिक ढांचों की जन्मभूमि मनुष्य की चेतना है ।

फ्रेयरे की मनुष्य के बारे में मान्यताओं को समझने के लिए मनुष्य तथा जानवर में कुछ मूलभूत अंतरों को समझना आवश्यक है । जानवर 1. केवल ऐन्द्रिक बिम्बों से संचालित प्राणी है । 2. जगत से अनुकूलन करने वाला प्राणी है । 3. नैसर्गिक दिनचर्या निभाने वाला प्राणी है। मनुष्य में इससे मूलभूत अंतर यह है कि वह 1. ऐन्द्रिक बिम्बों के साथ-साथ विचार तथा संकेतीकृत संप्रेषण की क्षमता रखने वाला प्राणी है । 2. यथार्थ को रुपांतरित करने वाला प्राणी है । 3.उद्देश्यपरक परियोजना बना कर उद्देश्य प्राप्ति के लिए जुटने वाला प्राणी है ।

अंतत: मनुष्यों में ही अपने अनुभवों तथा आचरणों द्वारा जानने तथा सीखने की संभावना निहित है । वह लक्ष्य तथा प्रक्रियाओं के प्रति सजग रहने की क्षमता रखता है । उद्देश्यों, पद्धतियों, मूल्यों, विकल्पों तथा संसाधनों के उपयोग की विविधता दर्शाता है ।

फ्रेयरे द्वारा प्रतिपादित सीखने की प्रक्रिया को नीचे दिये गये वॅन-चित्र से समझा जा सकता है।

वन चित्र : सीखने की प्रक्रिया



क: शिक्षक द्वारा ज्ञेय-वस्तु के बारे में समझ तथा उसे समस्या के रूप में रखने की पूर्व तैयारी

ख: शिक्षक की शिक्षार्थियों के बारे में समझ

ग: शिक्षार्थियों के ज्ञेय-वस्तु के बारे में पूर्व-ज्ञान तथा पूर्व- अनुभव

घ: सीखने के लिए संवाद की मध्यस्थता । मूर्त-अनुभव देकर, उसको संकेतीकृत करना तथा फिर विश्लेषण द्वारा अपना तथा यथार्थ का रूपांतरण करना ।

संक्रमण की दिशा वस्तुस्थिति 1. स्थिरता 2. खामोशी की संस्कृति 3. प्रतिस्पर्धा 4. अधिकार भावना तथा बंधन व 5. रट्टा लगाने से रुपान्तरित स्थिति 1. गतिशीलता 2. संवाद तथा आलोचनात्मक प्रक्रिया सहभागिता 3. सहभागी ज्ञान 4. सृजनकर्ता तथा कर्ताओं की मुक्ति 5. विश्लेषण करने, प्रश्न उठाने, विकल्प खोजने की ओर है ।

आचार

यदि शिक्षा का यथार्थ रुपांतरित करना हो तो सबसे पहले कुछ ऐसे बुद्धिजीवियों को पहल करनी होती है जो स्कूल तथा सांस्कृतिक विछिन्नता को पहचान लेते हैं । सबसे पहले तो समुदाय को जागरूक करना होता है । लोक कलाओं, लोक साहित्य विधाओं, रंगमंच, संगीत आदि के द्वारा उनको एक मंच पर लाकर उनमें आलोचनात्मक चेतना को जागृत करना होता है। इस प्रक्रिया में बुद्धिजीवी जनता की बुद्धिमता पर विश्वास करते हैं, उन्हें ज्ञान का स्रोत समझ कर यथार्थ का सामूहिक पुनर्विश्लेषण करते हैं एवं नए यथार्थ को परिभाषित करते हैं । इसके पश्चात् सामूहिक परियोजना बनती है तथा उस पर सहभागिता पूर्ण कार्यवाही होती है।

रुपांतरण की प्रक्रिया एक सामाजिक प्रक्रिया है । फ्रेयरे के अनुसार इस प्रक्रिया में आंतरिक तथा बाह्य अंतर्विरोधों को उजागर करना होता है जो पहले नहीं पहचाने गए थे । इसमें समाज की संरचनाओं को एक बार पुन: खोजना होता है । अधिकांशत: उत्पीड़क समाज शिक्षा तथा शब्द तय करता है, अपने विचार आरोपित करता है ताकि वह अपने आर्थिक हित तथा अधिकारों को साध सके। जब उत्पीड़ित समाज की खामोशी टूटती है तो सच्ची शिक्षा की शुरुआत होती है ।

इस समय विभिन्न राज्यों में जनसहभागिता आधारित प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीनीकरण की परियोजनाएं चल रही हैं । देखना यह है कि ये परियोजनाएं समाज व शिक्षा को रुपांतरित करने के लिए फ्रेयरे के शिक्षा दर्शन से कितनी प्रेरणा ले पाती हैं ? दरअसल, शिक्षा के बारे में बातें बहुत पते की हैं पावलो फ्रेयरे की । मूलत: वे शिक्षा को मुक्ति के लिए एक सांस्कृतिक कार्यवाही मानते हैं । ◆

जयपुर में राष्ट्रीय पुस्तक मेला

आठ साल के लंबे अंतराल के बाद नेशनल बुक ट्रस्ट की ओर से जयपुर में अगले वर्ष 20वां राष्ट्रीय पुस्तक मेला आयोजित किया जायेगा । मेले का उद्घाटन एक जनवरी को होगा । यह मेला 10 जनवरी तक चलेगा ।

मेले के आयोजन में नेशनल बुक ट्रस्ट (एनबीटी) का सहयोग राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी करेगी। एनबीटी और अकादमी के पदाधिकारियों की संपन्न बैठक में मेले के आयोजन का निर्णय किया गया । मेले में खरीददारी के लिए पुस्तकें 2 जनवरी से उपलब्ध हो सकेंगी ।

बैठक में मेले का आयोजन स्थल राम निवास बाग प्रस्तावित किया गया और तय किया गया कि इस बारे में न्यायालय से अनुमति मांगी जाएगी ।

एनबीटी के पदाधिकारों ने जयपुर में सफल राष्ट्रीय मेले के लिए स्थानीय प्रकाशकों, राज्य सरकार और अकादमियों की सक्रिय भूमिका की आवश्यकता जताई । बैठक में बताया गया कि इस दस दिवसीय पुस्तक मेले में एनबीटी कई महत्वपूर्ण सेमिनार और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन करेगा ताकि अधिकाधिक लोगों को मेले से जोड़ा जा सके । लेकिन पुस्तक प्रेमी दो रुपये का प्रवेश शुल्क देकर ही मेले में पुस्तकें देख और खरीद सकेंगे । मेले में 250 से 300 बुक स्टॉल लगाए जाएंगे । इससे पूर्व जयपुर में 1981 और 1991 में पुस्तक मेले का आयोजन किया गया था । बैठक में नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष सुमतींद्र नाडिग, निदेशक एन. के. भट्टाचार्य. उपनिदेशक तालेवर गिरी, उपनिदेशक (प्रदर्शनी) रविराज पाल, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी के निदेशक डा. वेदप्रकाश सहित कई पदाधिकारियों ने भाग लिया । ◆